موضوع الخطبة :الإيمان بالرسل 2/1

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن تيمى (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

संदेशवाहकों पर ईमान लाने के तक़ाज़े 1/2

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

(يَا أَيُّهَ الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रशंसाओं के पश्चात!
सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

1.ए मुस्लमानों!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने **ह्रदय** में जीवित रखो,उसकी अज्ञाकारिता करो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जान लो कि बंदों के प्रति अल्लाह का कृपा ही है कि उसने **उनकी ओर संदेशवाहक भेजे** ताकि उनकी धार्मिक एवं संसारिक मामलों में जो चीजें उनके लिए लाभदायक हैं,उनका ज्ञान उन तक पहुंचाऐं,उन्हें संसार की अच्छाई एवं आखिरत की मोक्ष का मार्ग दिखाऐं,क्योंकि मनुष्यों के पास चाहे जितना भी ज्ञान एवं बुद्धिमत्ता हो उनकी बुद्धि ऐसी संयुक्त एवं सामान्य शरीअ़त तक पहुंच प्राप्त नहीं कर सकतीं जिससे उम्मत के समस्त मामले ठीक रूप से संपन हो सकें,क्योंकि मनुष्य की बुद्धि अधूरी हैं,किंतु अल्लाह तआ़ला निती रखने वाला एवं अवज्ञत है और वह अपने जीवों की आवश्यकता से अति अवज्ञत है,अल्लाह का कथन हैः

﴿ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير﴾

अर्थातःक्या वही न जाने जिसने पैदा किया?फिर वह बरीकबीं और अवज्ञत भी हो।

अतः**संदेशवाहक अल्लाह और जीव के मध्य अल्लाह के धर्म को पहुंचाने के लिए दूत और माध्यम हैं**,अल्लाह तआ़ला का कथन हैः

(يا أيها الرسول **بلغ ما أنزل إليك** من رب)

अर्थातःए संदेशवाक जो कुछ भी आप की ओर आपके रब की ओर से नाज़िल किया गया है,पहुंचादें।

संदेशवाहकों का स्थान इस प्रकार उच्च था इस लिए उनपर ईमान लाना समस्त शरीअ़तों में धर्म का महत्वपुर्ण स्तंभ रहा,इस्लामी शरीअ़त में भी उनका यही स्थान है,जो यह सुनिश्चित करती है कि **संदेशवाहकों पर ईमान लाना ईमान का एक स्तंभ है**,और इसके बिना बंदे का ईमान सही नहीं हो सकता,अल्लाह का कथन हैः

﴿آمن الرسول بما أنزِل إليه من ربه والمؤمنون كل آمن بالله وملائكته وكتبه **ورسله** لا نفرق بين أحد من رسله﴾

अर्थातःसंदेशवाहक ईमान लाया उस चीज पर जो उसकी ओर अल्लाह की ओर से उतरी और मोमिन भी ईमान लाए,यह सब अल्लाह तआ़ला और उसके देवदूतों पर और उसकी पुस्तकों पर और उसके **संदेशवाहकों पर ईमान लाए,**उसके संदेशवाहकों में से किसी में हम भेद भाव नहीं करते।

2.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **नूह अलैहिस्सलाम सबसे प्रथम संदेशवाहक हैं**,अल्लाह का कथन हैः

﴿إنا أوحينا إليك كما أوحينا إلى **نوح** والنبيين من **بعده**﴾

अर्थातःनिसंदेह हमने आपकी ओर उसी प्रकार **वह्य** की है जैसे कि नूह़ (अलैहिस्सलाम) और उनके पश्चात के पैगंबरों की ओर की।
अनस बिन मालिक रजीअल्लाहु अंहु से अनुशंसा वाली ह़दीस में वर्णित है कि लोग(क़यामत के दिन)मनु के पास आएंगे ताकि वह अनुशंसा करें,किंतु वह क्षमा चाहते हुऐ कहेंगेः**नूह़** के पास जाओ,क्योंकि वह **सर्वप्रथम संदेशवाहक हैं** जिनको अल्लाह तआ़ला ने धरती पर भेजा।[1]

3.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **मोह़म्मद सल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे अंतिम संदेशवाहक और नबी हैं**,अल्लाह का कथन हैः

﴿ما كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ من رجَالِكُمْ وَلَكِن رسُولَ اللهِ **وَخَاتَمَ النَّبِيِّين**﴾

अर्थातःतुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता मोह़म्मद नहीं,किंतु आप अल्लाह तआ़ला के संदेशवाहक हैं और समस्त पैगंबरों के समाप्त करने वाले हैं।

4.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **प्रत्येक समुदाय में अल्लाह ने कोई न कोई संदेशवाहक भेजा** जो अपने समुदाय की ओर स्थायी शरीअ़त ले कर भेजे गए,अर्थात नबी भेजा जिनकी ओर उनसे पूर्व की शरीअ़त **वह्य** की गई ताकि वह पूर्णरूपेन इसका प्रचार व प्रसार करें,अल्लाह का कथन हैः

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا **فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً** أَن

اعْبُدُواْ اللهَ وَاجْتَنِبُواْ الطَّاغُوتَ﴾

अर्थातःहमने प्रत्येक उम्मह में संदेशवहक भेजा कि (लोगो!) केवल अल्लाह की पूजा करो और उसके अतिरिक्त समस्त देवताओं से बचो।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿**وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ** إِلاَّ خلا فِيهَا نَذِيرٌ﴾

अर्थातःकोई उम्मह एसी नहीं हुई जिसमें कोई डर सुनाने वाला न गुजरा हो।

[1] इसे बोखारीः4476 और मुस्लिमः193 ने वर्णित किया है,मुस्लिम के श्बद यह हैंःऔर वे लोग नूह़ अलैहिस्सलाम के पास आएंगे और कहेंगेःए नूह आप धरती पर भेजे जाने वाले सर्वप्रथम संदेशवाहक हैं.....।

5.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि संदेशवाहकों की शरीअ़तें यधापि विभिन्य थीं **किंतु उनकी दावत एक थी,**वह है तौही़दे उलूहियत की दावत,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وما أرسلنا من قبلك من رسول إلا نوحي إليه أنه **لا إله إلا أنا فاعبدون**﴾

अर्थातःतुझसे पूर्व जो संदेशवाहक हमने भेजा उसकी ओर यही **वह्य** नाज़िल फरमाई कि **मेरे अतिरिक्त कोई सत्य प्रमेश्वर नहीं,तुम सब मेरी ही पूजा करो।**

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿لكل جعلنا منكم **شِرعة ومنهاجا**﴾

अर्थातःतुममें से प्रत्येक के लिए हमने एक **नियम और एक मार्ग** स्थिर कर दिया है।

6.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **संदेशवाहक भी मनुष्य थे जिनका अल्लाह तआ़ला ने संदेशवाहन के लिए चयन किया**,उन्हें संदेशवाहन के कर्तव्य को पूरा करने और इस मार्ग में आने वाली कठिनाइयों पर धैर्य रखने की क्षमता प्रदान की,विशेस रूप से उूलूलअ़ज़म संदेशवाहकों को इसका विशेस गुण प्रदान किया,अल्लाह का कथन है:

﴿الله **يصطفي** من الملائكة رسلا ومن **الناس**﴾

अर्थातःदेवदूतों में से और मनुष्यों में से संदेश पहुंचाने वालों को अल्लाह ही **चयन करलेता है।**

7.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **संदेशवाहक भी मनुष्य एवं जीव हैं**,उनके अंदर रूबूबियत एवं उूलूहियत की कोई विशेषता नहीं पाई जाती,अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी मोह़म्माद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फरमाया,जो कि समस्त संदेशवाहकों के सरदार और अल्लाह के निकट उनमें सबसे महान स्थान एवं सर्वोच्च स्थान पर स्थिर थेः

﴿قُل **لاَّ أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلاَ ضَرًّا إِلاَّ مَا شَاء اللَّهُ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ** لاَسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَاْ إِلاَّ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ﴾

अर्थातः**आप फरमा दें कि में स्वयं अपने आपके लिए किसी लाभ का अथवा हानी की शक्ति नहीं रखता,किंतु इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा और यदि में गैब की बात जानता होता**

तो में अधिक लाभ प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानी नहीं पहुंचता,में तो केवल डराने वाला और शुभ संदेश सुनाने वाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं।

8.संदेशवहकों पर ईमान लाने का एक तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **संदेशवाहकों को वे समस्त रोग होते हैं जो मनुष्यों को होते हैं**,अर्थात रोगी,मृत्यु,खाने पीने की आवश्यकता आदि।अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम के प्रति फरमाया कि उन्होंने अपने रब की विशेषता इस प्रकार बयान फरमाईः

﴿وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِين

* وَإِذَا **مَرِضْتُ** فَهُوَ يَشْفِين * وَالَّذِي **يُمِيتُنِي** ثُمَّ يُحْيِينِ﴾

अर्थातःवही है जो मुझे खिलाता पिलाता है।और जब **में रोगी हो जाता हूं** तो मुझे स्वास्थ्य प्रदान करता है।और **वही मुझे मार डालेगा** फिर जिवित करदेगा।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः**में भी तुम्हारे जैसा एक मनुष्य हूं** जिस प्रकार तुम भूल जाते हो में भी भूल जाता हूं।इस लिए जब में भूल जाउूं तो मूझे याद दिलाया करो।[2]

9.संदेशवाहकों पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि **संदेशवाहक अल्लाह के बंदे हैं,अल्लाह तआ़ला ने अपने चयनित संदेशवाहकों की प्रशंसा करते हुए उन्हें उूबूदियत से चित्रित किया**,अतःनूह़ अलैहिस्सलाम के प्रति फरमायाः

अर्थातःवह बड़ा आभार व्यक्त करने वाला **बंदा** था।

﴿إِنَّهُ كَانَ **عَبْدًا** شَكُورا﴾

इब्राहीम,इस्ह़ाक और याकूब अलैहिस्सलाम के प्रति फरमायाः

﴿وَاذْكُرْ **عِبَادَنَا** إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ

وَيَعْقُوبَ أُوْلِي الأَيْدِي وَالأَبْصَار﴾

अर्थातःहमारे **बंदों** इब्राहीम,इसहाक और याकूब(अलैहिस्सलाम)का भी लोगों से उल्लेख करो जो हाथों और आंखों वाले थे।

ईसा बिन मरयम के प्रति फरमायाः

---

[2] इसे बोखारीः401 और मुस्लिमः572 ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसउूद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

﴿إِنْ هُوَ إِلاَّ **عَبْدٌ** أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ

وَجَعَلْنَاهُ مَثَلاً لِّبَنِي إِسْرَائِيل﴾

अर्थातःईसा भी केवल बंदे ही थे,जिस पर हमने कृपा किया और उसे बनी इसराईल के लिए एक चिन्ह बना दिया।

और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रति फरमायाः

﴿تَبَارَكَ الَّذِي نزلَ الْفُرْقَانَ عَلَى

عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرا﴾

अर्थातःअति बरकत वाला है वह अल्लाह तिसने अपने **बंदे** पर फुरक़ान उतारा ताकि वह समस्त लोगों के लिए डराने वाला बन जाए।

ज्ञात हुआ कि समस्त रसूल अल्लाह के बंदे थे,इस लिए उनके लिए किसी भी प्रकार भी पूजा करना वैध नहीं,न ही प्रार्थना करना,न पशू की बली देना,न ही चढावा चढाना और न सजदे जैसी अन्य पूजाएं करना,बल्कि इन समस्त प्रार्थनाओं का पात्र केवल अल्लाह ही है,इस बात पर समस्त आकाशीय शरीअ़तों की एकजुटता एवं एकता है,जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः

﴿وما أرسلنا من قبلك من **رسول** إلا نوحي إليه أنه لا إله إلا أنا **فاعبدون**﴾

अर्थातःतुझसे पूर्व जो **संदेशवाहक** हमने भेजा उसकी ओर यही **वह्य** की कि मेरे अतिरिक्त कोई सत्य परमेश्वर नहीं,**तुम सब मेरी ही पूजा करो।**

- अल्लाह तआ़ला हमें और आप सबको कुरान की बरकतें प्रदान करे,मुझे और आप को इसकी आयतों और ह़िकमत(निती) पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुचाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सबके लिए क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे क्षमा प्राप्त करें,निसंदेह वह अति क्षमा करने वाला अति कृपा करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده

أما بعد:

10.आप जानलें-अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाजिल करे-कि संदेशवाहकों पर ईमान लाने का तक़ाजा यह भी है कि इस बात पर ईमान लाया जाए कि अल्लाह तआ़ला ने कुछ पैगंबरों को कुछ पर प्राथमिकता दी है,अल्लाह का कथन है:

﴿ولقد **فضلنا بعض النبيين** على بعض﴾

अर्थातःहमने कुछ पैगंबरों को कुछ पर प्राथमिक्ता दी है।

समस्त रसूलों में श्रेष्ठतर उूलूलअ़ज्म(महत्त्वाकांक्षी)रसूल हैं,उनकी संख्या पांच है,नूह,इब्राहीम,मूसा,ईसा और मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम,अल्लाह तआ़ला ने कुरान में दो स्थान पर इनका उल्लेख किया है,एक सूरह अह़ज़ाब और दूसरा सूरह शूरा,अल्लाह का कथन है:

﴿وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ **وَمِنكَ** وَمِن **نُّوحٍ**

وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ﴾

अर्थातःजबकि हमने समस्त पैगंबरों से वचन लिया और(विशेष रूप से)आपसे और इब्राहीम से,मूसा से और मरयम के बेटे ईसा से।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿شرع لكم من الدين ما وصى به **نوحا** والذي أوحينا **إليك** وما وصينا به **إبراهيم وموسى وعيسى** أن أقيموا الدين ولا تتفرقوا فيه﴾

अर्थातःअल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए वही धर्म निश्चित कर दिया है जिसको स्थापित करने का उसने नूह़ (अलैहिस्सलाम) को आदेश दिया था और जो (**वह़्य** के माध्यम से) हमने तेरी ओर भेज दी है,और जिसका बलपुर्वक आदेश हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा (अलैहिस्सलाम) की दिया था कि उस धर्म को स्थापित रखना और उसमें फूंट न डालना।

- ए मोमिनों!संदेशवाहकों पर ईमान लाने के यह दस तक़ाजे हैं जिनको जानना और उनका ठोस ज्ञान रखना मोमिन पर अनिवार्य है ताकि वे इन तक़ाज़ों से अवज्ञत रहे और उसके पैर ईमान के मार्ग पर स्थिर रहे,उपदेश के संक्षेप को ध्यान में रखते हुए बाकी दस तक़ाज़ों पर हम अगले उपदेश में आलोक डालेंगे इनशाअल्लाह।
- आप यह जानलें-अल्लाह आप पर कृपा कर-कि अल्लाह तआ़ला ने आपको यह आदेश दिया है,अल्लाह का फरमान है:

(إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا)

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़यामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

- हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।
- हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना।
- हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के प्रति कृपा का कारण बना दे।
- हे अल्लाह!हम तुझसे दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की दूआ मांगते हैं,जो हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं,और हम तेरी शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त पापों से जा हमको मालूम है और जा हमको मालूम नहीं।
- हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग के स्वाली हैं और उस कथन एवं कार्य के भी जो स्वर्ग से निकट करदे,अैर तेरी शरण चाहते हैं नरक से और उस कथन एवं कार्य से जो नरक से निकट करदे।
- हे अल्लाह! हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृत्युों पर कृपा कर और आज़माइशों से जूझ रहे हमारे भाइयों से आज़माइश को दूर करद।
- हे अल्लाह!हमारे धर्म को सूधार दे जो हमारे मामलों का रक्षक है,हमारी दुनिया को सूधार दे जहां हमारा जीवन गुज़रता है,हमारे आखिरत को दुरुस्त करदे,जो हमारा अंतिम ठेकाना है,प्रत्येक पुण्य के कार्य में हमारे लिए जीवन को बढ़ादे,और मोत को हमारे लिए शांति का वस्तू बना।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर,और नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- ए अल्लाह के बंदो!निसंदेह अल्लाह तआ़ला न्याय का,कलयाण का एवं परिजनों के साथ सुंदर व्यवहार का आदेश देता है और **अश्लीलता** के कार्यों,अशिष्ट गतिविधियों और क्रूरता व निर्दयता से रोकता है वह स्वयं तुम्हें प्रामर्श कर रहा है कि प्रामर्श प्राप्त

करो।इस लिए तुम अल्लाह शक्तिशाली का जिक्र करो वह तुम्हारा जिक्र करेगा,उसके आशीर्वादों पर उसका आभारी रहो वह तुम्हें और अधिक आशीर्वाद प्रदान करेगा,अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी चीज है,तुम जो कुछ भी करते हो वह उससे अवज्ञत है।

लेखक:

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

शौवाल १४४१ हि़जरी

जूबैल, सउूदी अ़रब

००९६६५०५९०६७६१

अनुवादः

फैजुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com